श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

प्रथम वर्ष - अभ्यास - ७

May - 2021

प्रश्न - पत्र

गुणांक - १००

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ६. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. सब सद्गुणों की माता ..... है ।
२. शांति ..... से होती है, हिंसा से नहीं ।
३. स्नेही स्वजन भी ..... के पंजे से नहीं छुडा सकते हैं ।
४. हिंसा के भयंकर विपाक हम ..... की कथा से जान सकते हैं ।
५. ..... और अध्ययन में प्रशांत रहकर जहाँ तहाँ सो जाता हूं ।
६. बारह भावनायें ..... के मार्ग को दर्शाने वाली हैं ।
७. उत्तम पुरुष ..... कर्म के उदय से हीन कुलों में गर्भपने आते हैं, परंतु जन्म नहीं लेते ।
८. जब मान कषाय कम होता है तभी ..... धर्म प्रगट होता हैं ।
९. सख्त परिश्रम मांगने वाली ..... की शरणागती खूब कठित है ।
१०. युवा व्यक्ति समाज के सज्जनो की शर्म से ..... से अटकता है ।
११. मिथ्यात्व ..... कषाय और प्रमाद ये कर्म बंध के कारण है ।
१२. मध्यस्थ रहकर तुम सच्चा धर्म विवेक से देख सकते हो इसलिये ही तुम ..... हो ।
१३. पूर्व में किये गये पाप की ..... प्रगट रुप से विशेषतः निंदा करता हूँ ।
१४. जैसे किसान खेत में बैलों द्वारा धान्य के बीज बोता है, वैसे ही इस भरत क्षेत्र में ..... का वपन करेगा ।
१५. किल्बिषिक देव ..... के देव हैं ।
१६. नव ग्रैवेयक और पाँच अनुत्तर ये ..... हैं ।
१७. तूने मेरा ..... कल्पवृक्ष उखाड दिया है ।
१८. दूध और पानी को अलग कर देने का महान गुण ..... में होता है ।
१९. महाव्रतघात के समय ..... चारित्र प्रायश्चित रुप से उच्चराया जाता है ।
२०. ..... देवों के चर और स्थिर ऐसे दो विभाग है ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. श्री वीरप्रभु को देवानंदा की कुक्षी से संहरण कर त्रिशलादेवी की कुक्षी में स्थापित करने वाले देव कौन ?
२. कौन से देव वाण व्यंतर कहलाते हैं ?
३. हिंसा से सतत जीव के परिणाम कैसे होतें है ?
४. कौन से देव व्यवस्था वाले देव है ?
५. किसका वास हृदय में होगा तो परमानंद छा जायेगा ?
६. चमत्कारी बाबा पति-पत्नि को क्या कह कर चले गये ?
७. किस सूत्र से पापवाले व्यापार का त्याग किया जाता है ?
८. वीर प्रभु के जन्म समय पर कौन सी क्रीडा देश भर में चल रही थी ?
९. शुभ आशय से प्रवृति करने पर भी अनिवार्य रुप से जो हिंसा हो उसे क्या कहते है ?
१०. प्रभु की दीक्षा के समय कौन से देव तीर्थं प्रवर्ताने की विनंती करते हैं ?
११. कपट करके अन्य को ठगना कौन सा पाप स्थानक है ?
१२. आगम वचन मान कर क्षमा धारण करना कौन सी क्षमा है ?
१३. देवेन्द्र सौधर्म देवलोक में कौन से विमान में बैठे थे ?
१४. सूक्ष्म संज्वलन लोभ का उदय कौन से चारित्र में रहता है ?
१५. असी पत्र कौन है ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१) परपरिवाद २) सुहुमं ३) जोइसिया ४) असुइतं ५) सहावो ६) विहा ७) खायं ८) मुयई ९) साहगा
१०) छेओवट्ठावणं ११) अंगीकयं १२) सामाइ १३) मग्गिज्जई १४) पडिक्कमामि १५) वेमाणिया १६) दोसे
१७) दविहं १८) माया मृषावाद १९) तह २०) बोहि

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B
१) अदत्तादान	१) कलश
२) उदधिकुमार	२) दयालु
३) पवित्रता	३) लोकान्तिक
४) सम	४) अभ्याख्यान
५) अरुण	५) विपाक
६) आश्रव	६) लाभ
७) ध्वज	७) भवनपति
८) सौधर्मेन्द्र	८) भावना
९) श्रावक	९) शक्र
१०) वचन	१०) शौच

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. कल्पातीत देव कितने ?
२. संयम कितने प्रकार से है ?
३. पापस्थानक के दोष कितने भेद से लगते हैं ?
४. आठ वाणव्यंतर कितने योजन में रहते हैं ?
५. परमाधामी देव कितने ?
६. समभूतला पृथ्वी से सूर्य का विमान कितने योजन उपर है ?
७. परिहार कल्प पूर्ण करने के लिये कितने साधुओं को गच्छ बहार निकलना पडता है ?
८. साधारण वनस्पतिकाय की कुल योनियाँ कितनी ?
९. दया के प्रकार कितने ?
१०. ज्योतिष्क देवों के प्रकार कितने ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✔) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. लज्जा है वहाँ मर्यादा है और मर्यादा है वहाँ सलामती है ।
२. अति दुर्लभ बोधि की विचारणा चिंतन करना वह धर्म भावना है ।
३. अनुत्तर देवों के दस प्रकार हैं ।
४. किसी पर झुठा कलंक चढाना उसे अभ्याख्यान कहते हैं ।
५. सारसिका नाम की दासी ने राजा के मस्तक पर सफेद बाल देखकर कहा "यम का दूत आया है ।"
६. पत्नि ने कमंडल में पति का प्रतिम्बिब कुत्ते जैसा देखा ।
७. हरिणगमेषि देव इन्द्र की पायदल सेना का अधिपती था ।
८. त्रिशला माता सुगंधी पदार्थो से सुगंधी मालाओं से गर्भ का पोषण करती हैं ।
९. मेरा मेरा करते हुए भी कुछ भी उसका नहीं, कुछ भी उसके साथ जाता नहीं, ऐसा चिंतन करना अन्यत्व भावना है ।
१०. चारित्र याने सर्व सावद्य व्यापार का त्याग करके निर्दोष निष्पाप जीवन का स्वामी बनना ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. उसके पास परीक्षा कर सत्य प्राप्त करने की मध्यस्थ सौम्य दृष्टि नहीं है ।
२. प्रभु ने केवलज्ञान पाने के बाद माँ-बाप जीवित हो उसने दीक्षा नहीं लेनी चाहिये ऐसा कभी भी कहा नहीं है ।
३. वर्ण,गंध, रस, स्पर्श से जिनके समान स्थानक होते हैं, उसे एक स्थानक गिना जाता है ।
४. अभयदान से बडा धर्म इस पृथ्वीतल पर नहीं है ।
५. अतः मुझे ही यह पुण्य कार्य करना पडेगा ।
६. यह काया चमडी से मडी हुई अच्छी दिखती है, परंतु अंदर से देखने पर भयानक और विभत्स लगे ।
७. रोम रोम में आनन्द की उर्मियां उठेंगी ।
८. दुनिया में कुनिमित्त चारों और फैले हुए है ।
९. नीचे के भाग में रहने वाले देव अल्प पुण्य बल वाले होते हैं ।
१०. मैं जब गर्भ में हिलता, चलता हूँ तब माता को जरुर कष्ट होता होगा ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१). चौदह स्वप्न में से किन्ही तीन का वर्णन २) मध्यस्थ सौम्यदृष्टि ३) कल्पोपन्न और कल्पातीत देवो
४) अशरण भावना ५) यथाख्यात चारित्र

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :

शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८५ सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com